Roll No. : .....

Total No. of Questions : **14**] [Total No. of Printed Pages : **4**

ED–1067

B.A. B.Ed. (Ist Year) Examination, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - II (CC-1)

(मध्यकालीन काव्य)

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **60***

(खण्ड–अ) **(अंक : 2 × 8 = 16)**

नोट :– सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

(खण्ड–ब) **(अंक : 4 × 5 = 20)**

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का चयन कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **4** अंक का है।

(खण्ड–स) **(अंक : 8 × 3 = 24)**

नोट :– पाँच में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

खण्ड–अ

1. सभी **आठ** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर **50** शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए :

   (i) संत कबीरदास की वाणी को किसमें संग्रहित किया गया है ?

   (ii) जायसी भक्तिकाल की किस शाखा के कवि हैं और उसकी भाषा कौनसी है ?

(iii) तुलसीदास की किन्हीं **दो** रचनाओं के नाम बताइए।

(iv) ज्ञानाश्रयी शाखा के किन्हीं **दो** कवियों के नाम बताइए।

(v) 'नहिं भावे थारो देसड़लो' किस रचनाकार की पंक्ति है ?

(vi) कविवर सूरदास के गुरु का नाम बताइए।

(vii) संत कवि दादू किस पंथ के कवि हैं ?

(viii) ''प्रान वही जु रिझि वा पर, रूप वही जिही वाहि रिझायो'' पंक्ति में रसखान ने किसकी ओर संकेत किया है ?

खण्ड–ब

नोट :– आठ में से किन्हीं **पाँच** पदों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

2. बहुत दिनन तैं प्रीतम आये। भाग बड़े घरि बैठे आये॥
मंगलचार मांहि मन राखौ, राम रसांइण रसना चांपो।
मंदिर मांहि भया उजियारा, ले सूती अपना पीव पियारा॥
मैं खजिराती जे निधि पाई, हमहि कहा यहु तुमहि बड़ाई।
कहै कबीर मैं कछु न कीन्हाँ, सखी सुहाग राम मोहि दीन्हा॥

3. मन की व्यास प्रचंड न जाई।
माया बहुत बहुत विधि बिलसै, तृप्ति नहीं निरताई॥
ज्यूं जलधार असंख्य अतनि थल, परत न सो ठहराई।
तैसें यह मन भर्‌या भूख सों, देखि परखि सुधि पाई॥
असन वसन बहु होमि अगनि मुख, नहिं संतोष मिलाई।
ऐसी विधि या मन की क्षुधा है, बुझती नहीं बुझाई॥
भूख पियास संगले सूता, सो सपने न अघाई।
इहै सुभाव रहै मन मांहै, तृष्णा तरुन बधाई॥
मन माया सों कदे न धापै, सतगुरु साखि बताई।
जन रज्जब याकी यहु औषधि, राम भजन करि भाई॥

4. सँदेसनि मधुबन कूप भरे।

अपने तौ पठवत नहिं मोहन, हमरे फिरि न फिरे॥

जिते पथिक पठए मधुबन कौं, बहुरि न सोध करे।

कै वै स्याम सिखाइ प्रमोधे, कै कहुँ बीच मरे॥

कागर गये मेघ, मसि खूटी, सर दव लागि जरे।

सेवक 'सूर' लिखन कौ आँधौ, पलक कपाट अरे॥

5. अब कैसे छूटै, राम नाम रट लागी।

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी॥

प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवन चंद चकोरा।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती॥

प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा॥

6. या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख नन्द की गाइ चराइ बिसारौं॥

रसखानि कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक रौ कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

7. बरजी मैं काहू की नाहिं रहूँ।

सुनो री सखी तुमसों या मन की, साँची बात कहूँ।

साधु संगति करि हरि सुख लेऊँ, जगतैं हौं दूरि रहूँ।

तन मन धन मेरो सब ही जावो, भल मेरो सीस लहूँ।

मन मेरो लागो सुमिरन सेती, सबका मैं बोल सहूँ।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुरु शरण गहूँ॥

8. मन रे प्रभु की सरनि विचारों।

जिहि सिमरत गनका सी उधरी, ताको जसु उरि धारो॥

अटल भइओ धूअ जाकै, सिरमनि अरु उधरी नरभै पद पाइआ।

दुख हरता इह विधि को सुआयी, है काहै बिसराइआ॥

जबहि सरनि गहि किरपानिधि जगु ग्राह ते छूटा।

महिमा नाम कहा लउ बरणऊ, रामु कहत बंधनु तिह टूटा॥

अजामलु पापी जगु जाने, सिमरण मांहि निस्तारा।

नानक कहतु चेति चिंतामनि तै भी उतराहि पारा॥

9. अगहन दिवस घटा निसि बाढ़ी। दूभर रैनि, जाइ किमि गाढ़ी ?

अब यहि बिरह दिवस भा राती। जरौं बिरह जस दीपक बाती॥

काँपे हिया जनावै सीऊ। तौ पै जाइ होइ संग पीऊ॥

घर घर चीर रचे सब काहू। मोर रूप रंग लेइगा नाहू॥

पलटि न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूँ फिरै फिरै रंग सोई॥

बज्र अगिनि बिरहिनि हिय जारा। सुलुगि सुलुगि दगधै होइ छारा॥

यह दुख दगध न जानै कंतू। जोबन जनम करै भसमंतू॥

पिउ सों कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा! हे काग।

सो धनि बिरहै जरि मुई, ते हिक धुवाँ हम्ह लाग॥

खण्ड–स

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

10. "कबीर मध्यकाल के समाज सुधारक संत थे।" इस कथन की सत्यता पर प्रकाश डालिए।

11. जायसी के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

12. सूरदास की कृष्ण भक्ति पर निबन्ध लिखिए।

13. "रसखान वस्तुतः रस की खान थे।" इस कथन का विवेचन कीजिए।

14. संत कवि नानक के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।